संपादक के नोट

रोस ऑफ़ शारोन परिवार के मेरे प्रिय सदस्यों और रोस ऑफ़ शारोन पत्रिका के मेरे प्रिय पाठकों, तुम सबको में मेरे प्रभु और उद्धारकरता येशु मसीह के नाम से हमारी **रोस ऑफ़ शारोन कलिसिया के ८ वी वर्षगांठ** के इस अवसर पर शुभकामनाएँ देतीं हूँ।

कलिसिया के सालगिरह से बढ़कर यह आतमिक आनंद है कि प्रभु येशु मसीह हमारे साथ हैं।

आज, प्रभु तुम्हे देखता है, कहते हुँए, "डरो मत" क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ हैं, यह, कि, परमेश्वर का पुत्र येशु जो हमारा उद्धारकरता, छुड़ानेवाला और विजय का दाता है।

येशु तुम्हे पाप और मृत्यु से बचाता है। वह तुम्हे रोग और दुश्मन से छुड़ाएगा।

धन्य हैं हम जो नरक की शक्तियों से छुड़ाए गएँ हैं और शैतान के अभिशाप से मुक्त किए गएँ हैं जिसे परमेश्वर ने कुचल दिया है।

उद्धार प्राप्त करने से पहले, मैंने एक स्वप्न देखा था। मैंने एक दल–दल की नदी देखी। मैंने बहुत–से लोगों को उसमें से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करते हुए देखा, लेकिन वें बाहर आ नहीं सके और वें डूब गएँ। मैं भी उसके सामर्थ से खींची गई और बाहर आने के लिए संघर्ष कर रही थी, और मैं डूब रही थी। उस समय, मैंने एक मनुष्य को नदी के तट पर देखा अपने हाथों को मेरी ओर फैलाते हुँए। मैने उसके हाथों को कसके पकड़ा और उसने मुँझे दल–दल से खींच निकाला। अगर वह मनुष्य मुँझे न बचाता तो मैं उस दल–दल में डूब जाती और नरक की आग में पहुँच जाती। कितना महान है वह हाथ जिसके ज़रिए मैंने उद्धार का अनुग्रह पाया।

उद्धार का अर्थ है:

- ✓ पहला, परमेश्वर का अनुग्रह जिसने मुझे नरक की आग और अनंतकालिक वेदना से बचाया।

- ✓ दूसरा, परमेश्वर का अनुग्रह जो हमारे भीतर वास करता है परमेश्वर के पुत्र के रूप में।

- ✓ तीसरा, परमेश्वर का अनुग्रह यह है कि हमारे नाम जीवन के पुस्तक में लिखी जाएगी और अनंतकालिक जीवन का वचन है।

इन सभी वादों को पूरा करने के लिए येशु का जन्म मरियम के माध्यम से हुआ। उस परमेश्वर ने जिसने हमे अनुग्रह दिया रोस ऑफ शारोन कलिसिया का आरंभ करने के लिए, ८ व वर्ष की समाप्ती कर, अब हमारी अगुवाई ९ वे वर्ष में कर रहा है।

फिलिप्पियों :– १:५-६ – क्योंकि पहिले ही दिन से आज तक तुम सुसमाचार में मेरे सहभागी रहे हो। मुझे इस बात का निश्चय है कि जिसने तुम में भला कार्य आरम्भ किया है, वही उसे मसीह येशु के दिन तक पूर्ण भी करेगा।

येशु की ओर देखो जो हमारे विश्वास का कर्ता और सिद्ध करनेवाला है। **इब्रानियों १२:१-२ – इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमें घेरे हुए है, तो आओ, प्रत्येक बाधा और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धिरज से दौड़े, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले येशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रहें, जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके सामने रखा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।**

येशु ने जो अच्छे कार्यों का आरंभ किया है वह अभी तक समाप्त नहीं हुँआ है। प्रेरित पौलुस कहता है, **फिलिप्पियों : ३:१३-१४** मे – **हे भाईयो, मेरी धारणा यह नहीं कि मैं प्राप्त कर चुका हूं, परन्तु यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं, उन्हे भूल कर आगे की बातों की ओर बढता हुआ, लक्ष्य की ओर दौंड़ा जाता हूँ कि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह येशु में ऊपर बुलाया है।**

दाऊद अपने योवावस्था में परमेश्वर को केवल अपने चरवाहा के रूप में नहीं मानता था बल्कि उसके परामर्शदाता के रूप में भी मानता था।

हर एक बड़े और छोटे निर्णय, दाऊद परमेश्वर के चरणों में रखता था और परमेश्वर के परामर्श का इंतज़ार करता था। तदनुसार दाऊद ने अपने जीवन में परमेश्वर के आशिषों को पाया।

हालांकि दाऊद एक साधारण चरवाहा था, उसने इस्राएल का राजा बनने के लिए समृद्धि पाई। दाऊद को परमेश्वर द्वारा दिया गया वचन के अनुसार, **भजन संहिता ३:८ – मैं तुझे बुद्धि दूँगा और जिस मार्ग पर तुझे चलना है उसमें तेरी अगुवाई करूंगा,मैं अपनी दृष्टि तुझ पर लगाए रखकर तुझे सम्मति दूंगा।**

मेरे प्रिय लोगों, तुम्हारे जीवनों में भी केवल समस्यों के आने पर ही नहीं लेकिन हर समय परमेश्वर के परामर्श को खोजो।

नबी हबक्कूक का अनुभव क्या है? **हबक्कूक २:१** कहता है, **मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूंगा और गुम्मट पर चढ़कर ठहरा रहूंगा और इसकी प्रतिक्षा करूंगा कि वह मुझ से क्या कहेगा और मैं ताड़ना के समय क्या उत्तर दूंगा।**

परमेश्वर उत्तर देता है, **नीतिवचन ८:३४** मे **– धन्य है वह पुरूष जो मेरी सुनता है – मेरे फाटकों पर प्रतिदिन दृष्टि लगाए रहता है, वरन मेरी ड्योढ़ी पर प्रतिक्षा करता है।** यहा तक कि जब दाऊद जानता था कि उसका दुश्मन शाऊल मर चुका है, उसने राजा बनने के लिए जल्दबाज़ी नहीं की। उसने परमेश्वर से पूछा कि क्या वह यहूदा तक जा सकता था। उसने परमेश्वर की सम्मति ली और तदनुसार किया। **२ शमूएल २:१ – इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद ने यहोवा से पूछा, "क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं? तब यहोवा ने उसको उत्तर दिया, जा। अतः दाऊद ने पूछा, मैं कहा जाऊं? तब यहोवा ने कहा, "हेब्रोन में।**

पलिश्तियों स ेदो बार लड़ने के लिए दाऊद ने परमेश्वर की परामर्श ली। उसे विजय पर विजय प्राप्त हुआ। **शमूएल २:१९–५ – मेरी विपत्ति के दिन वे मुझ पर टूट पड़े, परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था। उसने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुंचाया, उसने मुझे छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था। यहोवा ने मेरी धार्मिकता के अनुसार मुझे प्रतिफल दिया है, मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार ही बदला दिया है। क्योकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा और अपने परमेश्वर के विरूद्ध मैंने दुष्टता का व्यवहार नहीं किया है। क्योंकि उसके सारे नियम मेरे सम्मुख थे, और मैं उसकी विधियों से नहीं हटा। मैं उसके सम्मुख निर्दोष बना रहा, और अधर्म के कार्यों से दूर रहा। इसलिए यहोवा ने मेरी धार्मिकता के अनुसार मुझे बदला दिया– हां, उसकी दृष्टि में मेरी शुद्धता के अनुसार।**

इसके कारण, इस्राएल का देश समृद्ध हुआ। दाऊद निरंतर परमेश्वर की स्तुति करता था जो उसे निर्देश दिया करता था। **भजन सहिंता ११:७ – मैं यहोवा का धन्य कहूंगा, जिसने मुझे सम्मति दी है, वरन मेरा मन भी रात को मुझे शिक्षा देता है।**

दाऊद लंबे आयुष्य तक धन और महिमा में जीया और एक शांतिपूर्ण मृत्यु पाई।

प्रियों, एक लंबी और शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए, परमेश्वर की परामर्श को सुना और उसके अनुसार चलो। **यशायाह ३०:२१ – जब कभी दाहिने या बाएं मुड़ने लगो तो तुम्हारे कान पीछे से यह वचन सुनेंगे, "मार्ग यही है, इसी पर चलो।"** – परमेश्वर आपको आशीष दें जब तक कि हम फिर मिलें।

पासटर सरोजा म.